JAGRAN CITY PAGE IV

मेडल के लिए मेधावियों के साक्षात्कार शुरू

लविवि में पदक के लिए मेधावियों के साक्षात्कार शुरू कर दिए गए हैं। ये अगले दो दिनों तक जारी रहेंगे, इसके बाद प्रमुख 15 पदकों को पाने वाले छात्रों के नामों की घोषणा कर दी जाएगी।

दीक्षा समारोह 21 नवंबर को किया जाएगा। विवि के 15 प्रमुख मेधावियों को दीक्षा समारोह में मेडल दिए जाएंगे, जबकि 194 प्रायोजित मेडल विभाग स्तर पर बाद में दिए जाएंगे। ये कार्यक्रम अगले पूरे साल में आयोजित किए जाते रहेंगे, जिसमें विभागों में मेधावी सम्मानित किए जाएंगे। विवि की प्रो. निशि पांडेय ने बताया कि प्रमुख 15 मेडल के अतिरिक्त बाकी मेडल प्रायोजित होते हैं। लोग अपने किसी प्रिय जो कि लखनऊ विश्वविद्यालय से जुड़ा रहा हो, उसकी स्मृति में पदक को प्रायोजित कर देते हैं। ये पदक भी प्रत्येक वर्ष दीक्षा समारोह के दौरान ही दिए जाते हैं, मगर इस बार कोरोना संक्रमण के कारण नहीं दिए जाएंगे। फिर भी मेधावियों की चयन प्रक्रिया तेजी से जारी है। जल्द ये सूची वेबसाइट पर अपलोड किया जाएगा।

—अंतरराष्ट्रीय फलक पर चमके सितारे—

जीवों को बचाने की प्रेरणा ने बनाया प्रधान मुख्य वन संरक्षक

• [illegible]

लखनऊ विश्वविद्यालय में जीव विज्ञान से बीएससी और जंतु विज्ञान से एमएससी किया। फिर उनका चयन भारतीय फारेस्ट सर्विस में हो गया। रामपुर में पहली तैनाती के साथ ही उनके करियर का सफर शुरू हुआ। निरंतर पदोन्नति करते गए। फिर वो दिन आया जब सुनील पांडेय प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्यजीव बने। दरअसल, लविवि में पढ़ाई के दौरान जीवों को बचाने की उन्हें गुरुजन से जो प्रेरणा मिली, यह सब उसी प्रतिफल था। इस विभाग में बड़े पद पर पहुंचने के बाद भी वह कुछ नहीं भूले। उन्हें लविवि में पढ़ाई और गुरुजन के मार्गदर्शन का हर लम्हा याद है।

सुनील पांडेय अपने गुरु डा. ओपी गुप्ता की सहृदयता को स्मरण करते हुए एक वाकया सुनाते हैं- उस दौर में जंतु विज्ञान में प्रैक्टिकल के लिए मेंढक, काकरोच और केंचुआ लाया जाता था। उसे देखकर उन्हें ही नहीं, उनके गुरु को भी दया आती थी। गुरु की सिखाने की मजबूरी होती थी, विद्यार्थियों को पास होने के लिए ऐसा करना जरूरी था। प्रैक्टिकल होता तो गुरुजी कहते कि अगर वन्यजीवों को बचा सकते हो तो बचाओ, इससे जल्दी सीखोगे। सुनील ने गुरु की इस वाणी को अपने जीवन का हिस्सा बना लिया। वन विभाग में वन्यजीवों की सुरक्षा की जिम्मेदारी मिली तो उन्हें अतिप्रसन्नता हुई। आज भी कोई वन्यजीव घायल अवस्था में मिलता है तो वह उसे बचाने के लिए हरसंभव प्रयास करते हैं। सरकार के ड्रीम प्रोजेक्ट गोरखपुर में बनने वाले चिड़ियाघर में उन्होंने अहम रोल निभाया। वे देश और विदेश में भी वन्यजीवों की सुरक्षा को लेकर सशक्त भूमिका निभाते रहे हैं। वन्यजीवों की सुरक्षा को लेकर सरकारी नीतियों को बनाने में इनका बड़ा योगदान रहा है।

- लविवि में पढ़े सुनील पांडेय ने वन विभाग में बड़े पद की संभाली जिम्मेदारी
- प्रदेश सरकार के ड्रीम प्रोजेक्ट में निभाई भूमिका नीतियां बनाने में भी योगदान

तब हमारे सेक्शन में 40 विद्यार्थियों में बस एक छात्रा थी

• [illegible]

1953 में कालिन तालुकेदार कालेज से इंटरमीडिएट पास करने के बाद मैंने भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान और गणित विषयों को लेकर लखनऊ विश्वविद्यालय में बीएससी में प्रवेश लिया। आचार्य जुगल किशोर तब कुलपति थे। शुरुआत में ही मैंने एक भीषण छात्र आंदोलन को दो दृष्टिकोण से देखा। शुरू के दो छात्र जुलूसों में हिस्सा लेते समय पुलिस-प्रशासन की कार्रवाई देखी, जो किसी छात्र को अच्छी नहीं लगती है। मेरे पिता स्व. श्री एसएनएस त्रिपाठी उस समय जिलाधिकारी लखनऊ थे। अपने घर पर मैंने तत्कालीन वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक को लहूलुहान भी देखा था, जो किसी प्रदर्शनकारी की ईंट के हमले का शिकार हो गए थे।

हमारे दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उप्र राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने विद्वतापूर्ण धाराप्रवाह भाषण दिया, जो मुझे अब तक याद है। हमारे सेक्शन में करीब 40 छात्रों में एक छात्रा थी। कुछ छात्र उन विभागों के विद्यार्थियों से ईर्ष्या करते थे, जिनमें ये संख्या अधिक थी। हम सभी साइकिल या बस से ही आते-जाते थे। प्रो. राम वल्लभ गणित पढ़ाते थे। प्रो. पीएन शर्मा और प्रो. चटर्जी जो क्रमशः भौतिक और रसायन के विभाग के अध्यक्ष थे, दूर से ही दिखाई देते थे। एमएससी के दौरान प्रो. शर्मा, प्रो. गोखले, प्रो. वाचस्पति समेत अन्य कक्षाओं से अच्छा संपर्क हुआ।

एक घटना याद आ रही है। हमारे एक सहपाठी बस से कानपुर जाने के लिए निकले और चारबाग से आगे लापता हो गए। उन्हें खोजने के लिए पूरी कक्षा ने एक दिन के हड़ताल की अनुमति विभागाध्यक्ष से मांगी। उन्होंने थ्योरी की कक्षा के बाद प्रैक्टिकल के समय जाने की अनुमति दी। उसी के पालन में हम लोग रिक्शा चालकों तथा बस स्टेशन पर निरर्थक पूछताछ करके लौट आए। 1956-57 के लिए मैं यूनिवर्सिटी फिजिकल सोसाइटी का अध्यक्ष चुना गया। इसी कारण से विश्वविद्यालय के प्राक्टोरियल बोर्ड का छात्र सदस्य भी था। 1957 में विश्वविद्यालय छोड़ने के बाद 1958-1961 मई तक गोरखपुर विश्वविद्यालय में सहायक प्राचार्य रहा। जून 1961 में भारतीय पुलिस सेवा से जुड़ा। पुलिस महानिदेशक उप्र के पद से मैं 1992 के अंत में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में प्रतिनियुक्ति पर गया, जहां से 1996 में महानिदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुआ। मुझे विश्वविद्यालय ने वह सब दिया, जिसके बल पर मैंने अपने सेवाकाल में उपलब्धियां पाई हैं।

(लेखक, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक रहे हैं।)

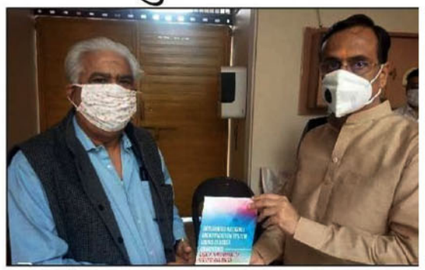

लखनऊ विवि की छांव में ही फली-फूली चिकित्सा शिक्षा

सितंबर 2004 तक केजीएमयू रहा लखनऊ विश्वविद्यालय का कॉलेज

• [illegible]

लखनऊ विश्वविद्यालय की छांव में ही चिकित्सा शिक्षा का वटवृक्ष किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी (केजीएमयू) तैयार हुआ। केजीएमयू जब किंग जार्ज मेडिकल कालेज (केजीएमसी) था, तब उसके सभी निर्णय लविवि में हो लिए जाते थे। जो साथ नाम जो आज जार्जियन होने के पीछे जुड़ा हुआ है, वह केजीएमसी को लविवि से ही मिला था, मगर 20वीं सदी की शुरुआत में केजीएमसी लविवि से अलग हो गया। उसको नया नाम मिला छत्रपति शाहूजी महाराज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लेकिन ये नाम बहुत समय तक कायम नहीं रहा। आखिरकार कुछ सालों बाद वर्तमान नाम किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय मिला।

1911 में केजीएमसी अस्तित्व में आया था। 1921 में लखनऊ विश्वविद्यालय में नियमित शैक्षणिक सत्र शुरू किए गए और कुछ सालों बाद केजीएमसी लविवि से संबद्ध हो गया। जब तक केजीएमसी संबद्ध था, तब तक उसकी सारी व्यवस्था लविवि ही देखता था। लविवि कार्य परिषद से ही कॉलेज को चलाने के सारे निर्णय लिए जाते थे। केजीएमयू के डाक्टर दुनिया भर में जार्जियन के नाम से मशहूर थे, मगर पूर्व मुख्यमंत्री मायावती के समय में 16 सितंबर 2001 को केजीएमसी विश्वविद्यालय बना। लविवि के पूर्व प्रोफेसर एमपी सिंह बताते हैं कि एक वह समय था जब केजीएमयू के विद्यार्थी खुद को गर्व से लखनऊ विश्वविद्यालय का विद्यार्थी बताया करते थे। लविवि के छात्र-छात्राओं के लिए अलग से वार्ड होता था। लविवि के स्टाफ के लिए मुफ्त इलाज होता था। ये विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात थी कि इतना बड़ा चिकित्सा महाविद्यालय लविवि से संबद्ध था।

लविवि का छत्रपति शिवाजी ग्राउंड • जागरण

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

दीक्षांत : आज जारी हो सकती है पदक सूची

लखनऊ। लविवि के दीक्षांत समारोह में दिए जाने वाले सबसे प्रतिष्ठित चांसलर, चक्रवर्ती तथा कुलपति पदक के लिए मंगलवार को साक्षात्कार हुआ। इन पदकों पदक के साथ ही अन्य मेडल की घोषणा बुधवार को होने की संभावना है। लविवि ने इन पदक पर विद्यार्थियों से आपत्ति भी मांगी है। इसके बाद अंतिम सूची जारी होगी। दीक्षांत समारोह 21 नवंबर को होगा।

उप मुख्यमंत्री ने एलयू में किया पुस्तक विमोचन

■ एनबीटी, लखनऊः उप मुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा ने लखनऊ विश्वविद्यालय में ' एकीकृत राष्ट्रीय पहचान प्रणाली में क्लस्टर कम्प्यूटिंग का उपयोगः डिजाइन, कार्यान्वयन, सुरक्षा एवं नैतिकता' पुस्तक का विमोचन किया।

पुस्तक एलयू के कॉमर्स विभाग के प्रो. सोमेश कुमार शुक्ला और डॉ. सुमन कुमार मिश्र, सहायक आचार्य, अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संकाय ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती विश्वविद्यालय, व शोभित शुक्ला, सहायक आचार्य, डॉ. शकुन्तला मिश्रा, राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से लिखी गई है।

प्रो. सोमेश कुमार शुक्ला ने कहा कि आधार कार्ड धारकों एवं नए उपयोगकर्ताओं का संयोजन राष्ट्रीय पहचान कोड (एनआईसी) के रूप में प्रस्तावित किया गया। यदि भविष्य में एनआईसी को लागू किया जाए, तो एनआईसी हमारे जीवन में एक प्रमुख भूमिका निभाते हुए जीवन को आसान बनाने का मार्ग प्रशस्त करेगा ।

HINDUSTAN PAGE 5

एलयू में दीक्षांत मेडल के लिए साक्षात्कार शुरू

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में दीक्षांत समारोह में मेडल के लिए मेधावियों के साक्षात्कार शुरू हो गए हैं। दीक्षांत समारोह का आयोजन 21 नवंबर को होगा। इससे पहले मेधावियों के नाम घोषित कर दिए जाएंगे।

प्रो. निशि पांडेय ने बताया कि प्रमुख 15 मेडल के अलावा बाकी मेडल प्रायोजित होते हैं। ऐसे पदकों की कुल संख्या 194 है जो कि प्रत्येक वर्ष दीक्षांत समारोह के दौरान ही दिए जाते हैं लेकिन इस बार नहीं दिए जाएंगे। मेधावियों की चयन प्रक्रिया जारी है। जल्द मेडल लिस्ट की सूची वेबसाइट पर अपलोड कर दी जाएगी।

NBT PAGE 5

आचार्य नरेंद्र देव ने हॉस्टल के लिए दे दिया था अपना बंगला

की अनूठी कहानियां

एनबीटी, लखनऊः लखनऊ विश्वविद्यालय का 100 साल का गौरवशाली इतिहास रहा है। लखनऊ विवि ने देश को वड़ी वड़ी हस्तियां दी हैं। जिसमें देश के राष्ट्रपति, गवर्नर, मुख्यमंत्री व कई मंत्री तक शामिल हैं। वहीं कुछ ऐसे गुरु भी मिले हैं, जिन्होंने विवि के साथ ही समाज के पिछड़े वर्ग के लोगों को आगे लाने के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया। इनमें से एक आचार्य नरेंद्र देव भी रहें। जिन्होंने पिछड़े वर्ग के स्टूडेंट्स के लिए अपना वंगला तक खाली कर दिया था।

आचार्य नरेंद्र देव वर्ष 1947 से 1951 तक लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति रहें। लखनऊ यूनिवर्सिटी के पब्लिक एडमिन विभाग के प्रोफेसर व अवध यूनिवर्सिटी फैजावाद के पूर्व कुलपति प्रो. मनोज दीक्षित वताते हैं कि आचार्य नरेंद्र देव ने सन 1947 में आजादी मिलने के तुरंत वाद पुणे में झंडा रोहण किया था। वहां से चलकर अगले दिन लखनऊ यूनिवर्सिटी आकर कुलपति का पद भार संभाला था। कार्यकाल के दौरान उन्हें रहने के लिए गोमती किनारे स्थित कवूतर कोठी तत्कालीन कुलपति आवास आवंटित हुआ था। वह महान समाजसेवी व समाज सुधारक भी थे। जब पिछड़े समुदाय के स्टूडेंट्स के रहने के लिए एलयू में हॉस्टल नहीं था तो उन्होंने अपना वंगला खाली कर इनके लिए हॉस्टल वनवाया था।

न्यू हैदराबाद में किराए के मकान में रहने चले गए थे तत्कालीन वीसी

सैलरी भी नहीं ली

प्रो. दीक्षित बताते हैं कि पिछड़े वर्ग के स्टूडेंट्स के लिए अपना बंगला देने के बाद आचार्य नरेंद्र देव न्यू हैदराबाद एरिया में एक किराए के मकान में रहने चले गए। उनको एलयू में बने दूसरे कई बंगला आवंटन करने की काफी कोशिश की गई, लेकिन उन्होंने लेने से मना कर दिया। उनका कहना था गरीब छात्रों के रहने की व्यवस्था पहले होनी चाहिए। यही नहीं कुलपति पद पर रहने के दौरान उन्होंने सैलरी भी नहीं ली थी। वह हर रोज नियमित रूप से क्लास लेने जाते थे।

अगले सत्र से विभागीय स्तर से होंगे दाखिले

एलयू में प्रवेश प्रक्रिया को विकेंद्रीकृत करने की तैयारी

■ एनबीटी, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रवेश के दौरान गड़वड़ियों को देखते हुए अहम फैसला लिया गया है। एलयू प्रशासन अव प्रवेश प्रक्रिया में वड़ा वदलाव करने जा रही है। वीवीएयू समेत देश के दूसरे केन्द्रीय विश्वविद्यालयों की तर्ज पर एलयू भी प्रवेश की प्रक्रिया को विकेंद्रीकृत किया जाएगा। इसके तहत एक समिति द्वारा सभी विभागों में प्रवेश की जगह विभागीय स्तर पर दाखिले होंगे।

एलयू के 49 विभागों में स्नातक की करीव 3500 और परास्नातक की 4500 सीटें हैं। अव तक केंद्रीकृत व्यवस्था से प्रवेश होते हैं। अव इसमें वदलाव किया जा रहा है। सूत्रों के अनुसार सव ठीक रहा तो अगले सत्र से नई व्यवस्था लागू कर दी जाएगी। एलयू ने वर्तमान सत्र में कॉलेजों के लिए केन्द्रीकृत प्रवेश की व्यवस्था लागू की थी। वैकल्पिक व्यवस्था को स्थायी किया जा सकता है। यानी कॉलेजों में सीधे प्रवेश प्रक्रिया वंद करके वीएड की तर्ज पर केन्द्रीकृत व्यवस्था से दाखिले की तैयारी है।

गुणवत्ता पर भी फोकस

■ एनबीटी, लखनऊ : एलयू ने अपनी भावी योजनाओं में संबद्ध कॉलेजों पर भी फोकस करना शुरू कर दिया है। विवि से अब तक राजधानी के ही 172 कॉलेज जुड़े थे। वहीं अब सीतापुर, हरदोई, लखीमपुर जैसे पांच जिलों के कॉलेज जुड़ने से एलयू से संबद्ध कॉलेजों की संख्या करीब 350 हो जाएगी। एलयू के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय के अनुसार क्षमता बढ़ने से गुणवत्ता पर प्रभाव नहीं पड़ने दिया जाएगा, बल्कि गुणवत्ता पर अधिक फोकस किया जाएगा। वीसी के अनुसार पांच जिलों के कॉलेज एलयू से संबद्ध होने से आय भी बढ़ना तय है। ऐसे में ऐकेडमिक्स में सुधार के साथ ही विवि परिसर का जीर्णोद्धार भी करवाया जाएगा। इसके साथ ही विवि के हर बड़े निर्णय में विद्यार्थियों की राय को प्रमुखता दी जाएगी। वर्तमान में प्रमुख समितियों में विद्यार्थी शामिल हैं। अब मेधावियों को पार्ट टाइम जॉब देने पर भी विचार किया जा रहा है।

अब तक राजधानी के 172 कॉलेज ही थे संबद्ध

पांच और जिलों के कॉलेज जुड़ने से 350 पहुंचेगी संख्या